स्तनपान से बच्चे होशियार बनते हैं मगर...

स्तनपान के संदर्भ में यह सवाल उठता रहा है कि क्या इससे बच्चे ज़्यादा अक्लमंद बनते हैं। दरअसल यह सवाल 'प्रकृति बनाम परवरिश' की बहस के संदर्भ में उठता रहा है। कई लोग मानते हैं कि बुद्धिमत्ता प्रकृति प्रदत्त होती है जबकि कुछ का मत है कि यह परवरिश का परिणाम होती है। अब एक अध्ययन के नतीज़े बता रहे हैं कि जवाब वास्तव में मिला-जुला है।

यह मानकर कि परवरिश का एक महत्वपूर्ण भाग स्तनपान है, किंग्स कॉलेज के अवशालोम कास्पी और टेरी मोफिटी ने यह अध्ययन किया कि स्तनपान और अक्लमंदी का क्या सम्बंध है। आम तौर पर ऐसे अध्ययन जुड़वां बच्चों पर किए जाते हैं जो या तो जन्म के बाद साथ-साथ रहे हों या अलग-अलग रहे हों। मगर कास्पी और मोफिटी ने थोड़ा अलग रास्ता अपनाया।

सबसे पहले उन्होंने यह देखा कि वे जीन कौन-से हैं जो उन वसा अम्लों के अंगीकरण से सम्बंधित हैं जो तंत्रिका विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। उनकी परिकल्पना थी कि ऐसे जीन्स स्तनपान से मिल सकने वाले फायदों को साकार करने में अहम भूमिका निभाते होंगे। काफी खोजबीन के बाद एक ऐसा जीन (FADS2) मिला जो यह भूमिका निभा सकता है।

यह जानकारी मिलने के बाद न्यूज़ीलैण्ड के करीब 1000 बच्चों के आई.क्यू. अंकों का विश्लेषण किया गया। ये सारे बच्चे 1972 में पैदा हुए थे और इनके आई.क्यू. की जांच 7, 9, 11 और 13 वर्ष की उम्र में की गई थी। यही अध्ययन बाद में ब्रिटेन के करीब 2200 बच्चों पर दोहराया गया। ये बच्चे 1994-95 में पैदा हुए थे और 5 वर्ष की उम्र में इनका आई.क्यू. परीक्षण हुआ था। सभी बच्चों के बारे में यह जानकारी उपलब्ध थी कि बचपन में उन्हें स्तनपान मिला था या नहीं। इसके अलावा डी.एन.ए. परीक्षण की मदद से यह भी पता लगाया गया कि किन बच्चों में FADS2 का कौन-सा रूप है।

न्यूज़ीलैण्ड के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि जिन बच्चों में FADS2 जीन का 'सी' रूप था उनमें से जिन्हें स्तनपान मिला था उनका आई.क्यू. स्तनपान-रहित बच्चों से औसतन 6.4 अंक बेहतर था। ब्रिटेन के बच्चों में यही अंतर 7.0 पाया गया। दूसरी ओर इसी जीन के 'जी' रूप वाले बच्चों में स्तनपान मिलने न मिलने का कोई असर आई.क्यू. पर नहीं देखा गया।

प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ में ये परिणाम प्रकाशित करते हुए शोधकर्ताओं ने स्पष्ट किया है कि इनसे पता चलता है कि स्तनपान से लाभ तो होता है मगर तभी जब शरीर में इसका लाभ उठाने की क्षमता (यानी FADS2 जीन का उपयुक्त रूप) मौजूद हो। इससे यह भी चेतावनी मिलती है कि प्रकृति बनाम परवरिश सम्बंधी अनुसंधान करते हुए यह ध्यान रखना चाहिए कि इनके बीच अंतर्क्रिया महत्वपूर्ण है। शोधकर्ताओं का मत है कि वास्तव में प्रकृति बनाम परवरिश की बजाय परवरिश के ज़रिए प्रकृति की बात करना बेहतर व वास्तविकता के ज़्यादा करीब होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***